भारत की नेबरहुड पॉलिसी संभावनाएं और चुनौतियां

"भारत के पड़ोसी देश भौगोलिक क्षेत्र की अभिव्यक्ति भर नहीं हैं; बल्कि ये हमारे लोकाचार, हमारी संस्कृति और हमारी परंपराओं के प्रतिबिंब भी हैं।"

भारत के पड़ोसी देश इसकी विदेश नीति के केंद्र में रहे हैं। यह नीति इस सोच का परिणाम है कि भारत के विकास संबंधी विविध लक्ष्यों को प्राप्त करने में उसके पड़ोसी देशों का शांतिपूर्ण होना आवश्यक है। दरअसल, भारत के पड़ोसी देश निरंतर बदलती जटिलताओं के रूप में भारत के समक्ष चुनौतियां प्रस्तुत करते रहते हैं। इनमें से कुछ देश उच्च मुद्रास्फीति, आर्थिक अस्थिरता और जन असंतोष का सामना कर रहे हैं। भौगोलिक रूप से जुड़े होने के कारण पड़ोसी देशों के साथ भारत का क्षेत्रीय सहयोग महत्वपूर्ण हो जाता है। इसकी वजह यह है कि पड़ोसी देशों के लोगों द्वारा सामना की जा रही कोई भी चुनौती भारत में भी अपना प्रभाव दिखा सकती है। भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति अपने पड़ोसी देशों को प्राथमिकता देने की भारत की सोच को दोहराती है। इससे पता चलता है कि भारत इस क्षेत्र में स्थायी शांति, स्थिरता और समृद्धि का लक्ष्य प्राप्त करने की महत्वाकांक्षा रखता है।

इस डॉक्यूमेंट में हम निम्नलिखित विषयों पर चर्चा करेंगे:

1. भारत के पड़ोसी देश कौन-से हैं और भारत की नेबरहुड पॉलिसी क्या है? 2
   1.1. भारत की नेबरहुड पॉलिसी कैसे विकसित हुई है? 3
2. वर्तमान भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत की नेबरहुड पॉलिसी की प्रासंगिकता क्या है? 4
3. भारत को अपनी नेबरहुड फर्स्ट नीति की भावना को आगे बढ़ाने में किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है? 5
4. भारत अपनी नेबरहुड पॉलिसी को और अधिक मजबूत व प्रभावशाली कैसे बना सकता है? 7
5. निष्कर्ष 7
6. टॉपिकः एक नज़र में 8
7. बॉक्स और चित्र 9

1. भारत के पड़ोसी देश कौन-से हैं और भारत की नेबरहुड पॉलिसी क्या है?

वैसे तो **भारत के पड़ोसी देशों की पहचान के लिए कोई एकल, सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत आधिकारिक परिभाषा नहीं है,** लेकिन इस अवधारणा की व्याख्या प्रायः भू-राजनीतिक रूप में की जाती रही है। साथ ही यह व्याख्या ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संबंधी महत्त्व के आधार पर अलग-अलग भी हो सकती है। इसमें आम तौर पर निम्नलिखित को शामिल किया जाता है:

- **दक्षिण एशियाई क्षेत्र में भारत के निकटतम पड़ोसी देश** जिनके साथ भारत भौगोलिक रूप से अपनी स्थलीय/ समुद्री सीमाएं साझा करता है: **अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, मालदीव, म्यांमार, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका।**
  - इन देशों के साथ भारत के **सभ्यता आधारित संबंध** हैं। इन संबंधों में **साझा इतिहास, साझी संस्कृति और लोगों के बीच परस्पर संबंध** जैसी विशेषताएं शामिल हैं।
  - ये निकटतम पड़ोसी देश स्वतंत्रता के बाद से ही भारत की **"प्राथमिकता की प्रथम परिधि"** (First circle of priority) में शामिल रहे हैं, बशर्ते कि वे **भारत की सुरक्षा संबंधी चिंताओं के प्रति सजग रहें।**
- **विस्तारित पड़ोसी देश वे हैं, जो भौगोलिक रूप से तो भारत से दूर स्थित हैं,** किन्तु भारत के साथ उनके महत्वपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक संबंध हैं। **इनमें हिंद महासागर क्षेत्र के देश, दक्षिण-पूर्वी एशिया के देश या पश्चिम एशिया के देश** शामिल हैं।
- गौरतलब है कि **नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी** 1947 से ही **भारतीय विदेश नीति का अभिन्न अंग** रही है। इसका उद्देश्य अपने निकटस्थ पड़ोसी देशों के साथ मजबूत संबंधों को बढ़ावा देना, क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाना और साझा चिंताओं को दूर करना है।
- यह नीति भारत के **परामर्शदात्री, गैर-बराबरी** (Non Reciprocal) **और विकासोन्मुख** दृष्टिकोण से प्रेरित है।
  - गैर-बराबरी संबंधों का आशय **पड़ोसी देशों के साथ निःस्वार्थ रूप से सहयोग की नीति अपनाना** है।

चित्र 1.1: भारत के पड़ोसी देश

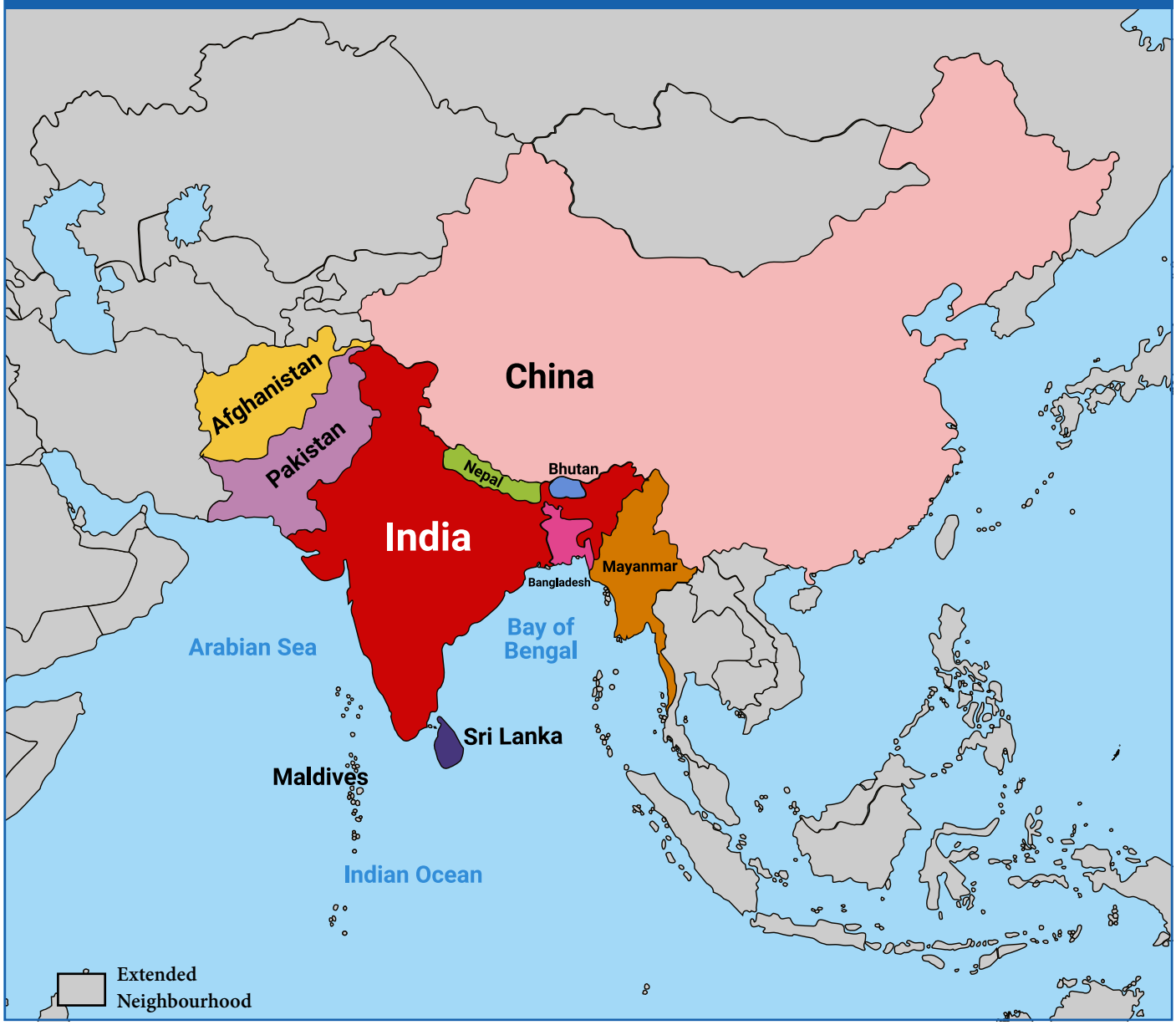

बॉक्स 1.1. विस्तारित पड़ोसी देश: भारत के वैश्विक नेतृत्व के प्रवेश द्वार

- भारत एक क्षेत्रीय महाशक्ति बनने और वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाने की आकांक्षा रखता है। इसलिए, वह अपने निकटतम पड़ोसी देशों के साथ संबंधों की तर्ज पर अपने **विस्तारित पड़ोसी देशों के साथ भी मजबूत संबंध** बना रहा है।
- **विस्तारित पड़ोसी में निम्नलिखित क्षेत्रों के देश शामिल हैं:**
  - **एशिया-प्रशांत:** भारत की **'एक्ट ईस्ट'** नीति एक प्रमुख राजनयिक पहल है। इसका उद्देश्य अलग-अलग स्तरों पर इस क्षेत्र **के साथ आर्थिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों** को बढ़ावा देना है। **एक्ट ईस्ट नीति** चार केंद्रीय विषयों पर आधारित है- **कनेक्टिविटी, कॉमर्स (वाणिज्य), कल्चर (संस्कृति) और कैपेसिटी-बिल्डिंग (क्षमता-निर्माण)**।
    - **आसियान, आसियान क्षेत्रीय मंच (ARF), पूर्वी एशियाई शिखर सम्मेलन (EAS)** आदि ऐसे प्रमुख संस्थागत मंच हैं, जिन्होंने इस क्षेत्र में द्विपक्षीय संबंधों के विस्तार में मदद की है।
  - **हिंद-प्रशांत क्षेत्र:** इस क्षेत्र के लिए भारत की नीति **"समावेशिता", "खुलेपन" और "आसियान केन्द्रीयता" की अवधारणा पर** आधारित है।
    - भारत की **सागर SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और संवृद्धि) नीति** का उद्देश्य सागरीय क्षेत्र में (विशेष रूप से हिंद महासागर क्षेत्र में) भारत के भू-राजनीतिक, सामरिक और आर्थिक हितों की रक्षा करना तथा उन्हें बढ़ावा देना है।
  - **समुद्र-तटीय अफ्रीकी देश:** **"डेवलपिंग टुगेदर एज इक्वल"** की भावना इस साझेदारी को परिभाषित करती है।
    - सेशेल्स और मॉरीशस जैसे द्वीपीय राष्ट्रों में **बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी** रहते हैं।
  - **मध्य एशिया:** भारत ने इस क्षेत्र में **आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को गहरा करने** के लिए **कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति अपनाई है।**
    - भारत ने 4C की रणनीति पर कार्य करने की आवश्यकता पर जोर दिया है: **कॉमर्स (वाणिज्य), कैपेसिटी-बिल्डिंग (क्षमता-निर्माण), कनेक्टिविटी और कॉन्टेक्ट।**
  - **पश्चिम एशिया:** भारत की **"लुक वेस्ट"** की नीति को **"लिंक एंड एक्ट वेस्ट"** नीति में बदल दिया गया है।
    - **लिंक एंड एक्ट वेस्ट** नीति में मोटे तौर पर **GCC (खाड़ी सहयोग परिषद) देशों के महत्वपूर्ण उप-क्षेत्र, ईरान, इजरायल और अन्य अरब देश** शामिल हैं।
    - **भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEC)** को हाल ही में प्रस्तावित किया गया है। यह इस क्षेत्र में भारत की मजबूत होती स्थिति का प्रमाण है।

1.1. भारत की नेबरहुड पॉलिसी कैसे विकसित हुई है?

जब पड़ोसी देशों के साथ व्यवहार की बात आती है तो भारत ने सदैव बड़े स्तर पर विनम्रता से पेश आने का प्रयास किया है। दक्षिण एशिया क्षेत्र के प्रति प्राथमिकताओं और धारणाओं के आधार पर, पड़ोसी देशों के साथ संबंध में रणनीतियां एवं प्राथमिकताएं समय के साथ विकसित हुई हैं। इस विकास को संक्षेप में इस प्रकार समझा जा सकता है:

- **औपनिवेशिक चरण: उपनिवेशवाद-विरोध, साम्राज्यवाद-विरोध और नस्लवाद-विरोध** (1948 का एशियाई संबंध सम्मेलन) की समान विचारधाराओं ने पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों को मजबूत किया था।
- **1950 और 1960 के दशक में भारत की नीति आदर्शवाद की विचारधारा से प्रेरित** थी। इसके तहत भारत के सुरक्षा हितों को आगे बढ़ाने के लिए केवल निकटतम पड़ोसियों पर ही ध्यान केंद्रित किया गया था।
  - भारत ने "क्षेत्रीय संरचना" की बजाय **द्विपक्षीय वार्ताओं और संधियों के जरिये** अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने का विकल्प चुना था। उदाहरण के लिए:
    - **भूटान (1949)** और **नेपाल (1950)** के साथ **मैत्री संधियों** पर हस्ताक्षर किए गए;
    - **भारत और चीन** के बीच **पंचशील समझौता (1954)** हुआ था आदि।
- **1960-1990 का दशक {क्षेत्रीय प्रभुत्व और उप-महाद्वीपीय वर्चस्व (Hegemony) की स्थापना का चरण}**
  - इस चरण में विदेश नीति **'मुनरो सिद्धांत'** पर आधारित थी। इसके तहत भारत की नीति दक्षिण एशियाई पड़ोस में अपनी स्थिति स्थापित करने तथा क्षेत्र में विदेशी हस्तक्षेप को स्वीकार न करने पर केंद्रित थी।
    - **सिक्किम को भारतीय राज्यक्षेत्र में शामिल** किया गया। **1975 में भारत में इसका विलय** भी कर दिया गया।
    - मुक्ति संग्राम के बाद 1971 में पाकिस्तान से पूर्वी पाकिस्तान अलग होकर एक देश बना, जो अब **बांग्लादेश** के नाम से जाना जाता है। 2 जुलाई, 1972 में **भारत और पाकिस्तान के बीच शिमला समझौता हुआ** था।
    - **भारत और श्रीलंका** के बीच शांति समझौते पर हस्ताक्षर के पश्चात 1987 में श्रीलंका में भारतीय शांति रक्षक सेना (Indian Peacekeeping Force) ने प्रवेश किया था।
    - पड़ोसी देशों के साथ सहयोग को मजबूत करने के लिए **1985 में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC/सार्क)** की स्थापना की गई थी।
- **1990-2000 का दशक (एक जिम्मेदार बड़े भाई की तरह व्यवहार)**
  - दक्षिण एशिया में **सुरक्षा संबंधी दुविधा की प्रकृति को संघर्ष के रूप में देखने के दृष्टिकोण का त्याग किया गया।** इसकी बजाय एक ऐसी सामाजिक संरचना बनाने का प्रयास किया गया, जिसमें **बिना युद्ध लड़े देशों के मध्य विवादों को हल करने के लिए विश्वास सृजन पर बल दिया गया।**
    - **गुजराल डॉक्ट्रिन** पेश किया गया। इसके तहत भारत ने **एकतरफा रियायत** प्रदान करने की नीति के द्वारा क्षेत्र को अपना समर्थन देने का आश्वासन दिया।
    - 1990 के दशक के आर्थिक सुधारों के बाद, भारत ने इस क्षेत्र के **आर्थिक एकीकरण के लिए पहलें** भी शुरू की।

चित्र 1.2. गुजराल डॉक्ट्रिन के सिद्धांत

गुजराल डॉक्ट्रिन के 5 प्रमुख सिद्धांत

- **भारत पड़ोसी देशों को सहायता देने के बदले उनसे कोई अपेक्षा नहीं रखेगा,** बल्कि सद्भावना और विश्वास के आधार पर वह सब कुछ करेगा, जो वह कर सकता है।
- **कोई भी दक्षिण एशियाई देश** अपने संप्रभु राज्यक्षेत्र से इस क्षेत्र के **किसी अन्य देश के हितों के खिलाफ** गतिविधियां संचालित नहीं होने देगा।
- सभी दक्षिण एशियाई **देश एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का सम्मान** करेंगे।
- सभी दक्षिण एशियाई **देश एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं** करेंगे।
- सभी **विवादों को शांतिपूर्ण और द्विपक्षीय वार्ता के माध्यम से सुलझाया** जाएगा।

- **2008 के बाद:** भारत के निकटस्थ पड़ोसी देशों में **चीन का प्रभाव** बढ़ने लगा। इसलिए, भारत ने भी **'गुजराल डॉक्ट्रिन' का अधिक सख्ती से पालन** करना शुरू कर दिया।
  - **नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (NFP)** की परिकल्पना 2008 में की गई थी। इसके तहत संपर्क के सिद्धांतों को 5Ss के रूप में रेखांकित किया गया है:
    - **स**म्मान (Samman),
    - **सं**वाद (Samvad),
    - **शां**ति (Shanti),
    - **स**मृद्धि (Samriddhi) और
    - **सं**स्कृति (Sanskriti)।
- **2014 के बाद: 'आर्थिक सहयोग', 'विकास सहायता' तथा 'साझा चुनौतियों के समाधान'** के माध्यम से संबंधों को मजबूत करने के लिए NFP को नया रूप दिया गया।
  - NFP को पाकिस्तान को छोड़कर अन्य सभी पड़ोसी देशों से समर्थन मिला है। भारत का मानना है कि पाकिस्तान के साथ सहयोग पाकिस्तान द्वारा आतंक, शत्रुता और हिंसा को बढ़ावा देने की बजाय शांतिपूर्ण माहौल बनाने पर निर्भर करता है।
  - **सार्क** और **बिम्सटेक** (BIMSTEC) जैसे संगठनों के माध्यम से भारत **क्षेत्रीय एवं उप-क्षेत्रीय** पहलों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा है।

बॉक्स 1.2. कौटिल्य का "मंडल सिद्धांत": प्राचीन भारत में पड़ोसी राज्यों के प्रति नीति का पुनर्विलोकन

- राजव्यवस्था का "मंडल सिद्धांत" तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में **कौटिल्य (चाणक्य)** ने प्रतिपादित किया था।
- यह सिद्धांत इस अवधारणा पर आधारित है कि **"आपका पड़ोसी आपका स्वाभाविक शत्रु होता है और पड़ोसी का पड़ोसी आपका मित्र होता है।"**
- "मंडल सिद्धांत" **शक्ति संतुलन के सिद्धांत** पर आधारित है। इसे **संकेंद्रित वृत्तों (Concentric circles)** के माध्यम से दर्शाया गया है।
  - इस घेरे में, निकटतम पड़ोसी देश के **शत्रु (वास्तविक या संभावित) होने की सबसे अधिक संभावना** होती है। निकटतम पड़ोसी के बगल वाले देश के **सबसे पहले वाले देश के मित्र होने की संभावना** होती है। इस तरह यह क्रम चलता रहता है।
- संकेंद्रित वृत्तों के केंद्र वाले देश की परख इस बात से होती है कि वह अपनी संप्रभुता की रक्षा के लिए क्षेत्र के अन्य देशों के बीच कितना शक्ति संतुलन बनाए रखता है।
- 'मंडल सिद्धांत' की प्रणाली में, कौटिल्य ने पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने के लिए **छह सूत्रीय विदेश नीति** की अनुशंसा की है: **सह-अस्तित्व, तटस्थता, गठबंधन, दोहरी नीति, कूच और युद्ध।**
  - **इसे अमल में लाने के लिए उन्होंने राजा को अग्रलिखित पांच युक्तियां अपनाने की सलाह दी है:** संधि, उपहार, रिश्वत, असहमति, छल, दिखावा और खुला हमला या युद्ध।
- **संधियों और गठबंधन** के सवाल पर उनका सुझाव है कि, **"एक राजा को ऐसी किसी भी मित्रता या गठबंधन को तोड़ने में संकोच नहीं करना चाहिए जो आगे उसके लिए नुकसानदेह सिद्ध हो।"**

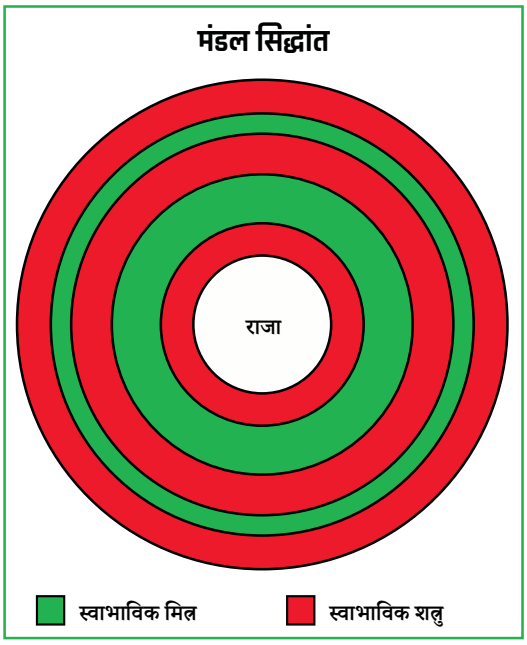

2. वर्तमान भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत की नेबरहुड पॉलिसी की प्रासंगिकता क्या है?

भौगोलिक दृष्टि से, पड़ोसी देश किसी भी देश की कूटनीति का पहला चरण और विकास की कुंजी होते हैं। भारत की अर्थव्यवस्था की संवृद्धि, सामाजिक विकास और भू-राजनीतिक मजबूती के लिए पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

- **भू-सामरिक हित:**
  - **क्षेत्रीय नेतृत्व:** हिंद महासागर क्षेत्र (IOR), वैश्विक सामरिक प्रतिस्पर्धा का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। इस क्षेत्र में पड़ोसियों के साथ सहयोग से **दक्षिण एशिया में भारत की केंद्रीय स्थिति** को मजबूती मिलेगी।
  - **चीन को प्रतिसंतुलित करना:** पड़ोसियों के साथ सहयोग से भारत को चीन के प्रभाव कम करने और IOR में **'नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर'** बनने की आकांक्षा को पूरा करने में मदद मिलेगी।
    - **नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर** का आशय ऐसे देश से है, जो अपनी सुरक्षा करने के साथ-साथ अन्य राष्ट्रों की सुरक्षा संबंधी चिंताओं का भी ध्यान रखता है।
  - **बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग:** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC), विश्व व्यापार संगठन (WTO), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) जैसे अलग-अलग बहुपक्षीय मंचों पर ग्लोबल साउथ का प्रतिनिधित्व करने के लिए **भारत को अपने पड़ोसी भागीदारों के साथ सहयोग** करना जरूरी है।
    - बहुपक्षीय मंचों पर उनके साथ सहयोग ने भारत के लिए **द्विपक्षीय संबंधों में एक क्षेत्रीय/ उप-क्षेत्रीय आयाम** प्रदान किया है। इससे **क्षेत्र की बेहतर समझ विकसित करने** में मदद मिली है।
- **सुरक्षा:**
  - **क्षेत्रीय अखंडता:** अलगाववादी समूहों को सीमा-पार शरण मिल सकती है। **भारत को ऐसे पड़ोसियों की ज़रूरत है,** जो उसकी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करें। साथ ही, **किसी भी विद्रोही समूह को भारत के खिलाफ अपनी भूमि का उपयोग करने की अनुमति न दें। उदाहरण के लिए:**
    - **भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में उग्रवाद को खत्म करने की लड़ाई में म्यांमार को एक प्रमुख भागीदार** के रूप में देखा जाता है।
  - **समुद्री सुरक्षा:** समुद्र के माध्यम से 2008 के मुंबई आतंकवादी हमले जैसे खतरे और चुनौतियां **उत्पन्न होने की हमेशा आशंका** बनी रहती है।
    - मालदीव, श्रीलंका, बांग्लादेश और म्यांमार जैसे सामुद्रिक पड़ोसी देशों के साथ सहयोग से **भारत को अपने प्रादेशिक जल क्षेत्र की प्रभावी निगरानी** करने में मदद मिलेगी।
- **आर्थिक हित:**
  - **ऊर्जा सुरक्षा:** भारत के **उत्तरी पड़ोसी देशों (नेपाल और भूटान)** में जल-विद्युत की अपार क्षमताएं मौजूद हैं। साथ ही, **तेल और गैस के आयात में किसी भी बाधा से निपटने के लिए हिंद महासागर तटीय पड़ोसियों** का सहयोग प्राप्त करना महत्वपूर्ण है।

» **भारत अपनी जरूरत का 80% से अधिक कच्चा तेल और 50% से अधिक प्राकृतिक गैस** दुनिया के विविध हिस्सों से आयात करता है। इनका आयात समुद्री मार्ग से भी किया जाता है।

- **पूर्वोत्तर क्षेत्र में विकास को बढ़ावा देना:** पड़ोसी देशों के साथ बेहतर संबंध भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के विकास में सहायक सिद्ध होंगे। उदाहरण के लिए:
  - » **बांग्लादेश** ने अपने **चट्टोग्राम और मोंगला बंदरगाहों** से होकर भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में **कार्गो के पारगमन एवं ट्रांस-शिपमेंट** की सुविधा प्रदान करने को मंजूरी दी है।
  - » भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को **म्यांमार के माध्यम से व्यापार और आर्थिक सहयोग के लिए दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ भी जोड़ा** जा सकता है। ध्यातव्य है कि **म्यांमार** आसियान का एकमात्र सदस्य देश है, जो भारत के साथ **स्थलीय सीमा साझा** करता है।

- **सॉफ्ट पावर कूटनीति:** भारत का अपने **पड़ोसियों के साथ मजबूत सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध** है। इससे भारत को क्षेत्र में **विविध सांस्कृतिक मूल्यों और अपने सॉफ्ट पावर के प्रभाव को बढ़ावा देने** में मदद मिल सकती है।
  - उदाहरण के लिए, भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया में **बौद्ध धर्म का प्रसार** लोगों के बीच परस्पर संबंधों और राजनयिक संबंधों को मजबूत करने के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करता है।

3. भारत को अपनी नेबरहुड फर्स्ट नीति की भावना को आगे बढ़ाने में किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है?

"नेबरहुड फर्स्ट" नीति के कार्यान्वयन के स्तर पर भारत को विविध प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इनमें ऐतिहासिक विवादों से लेकर सुरक्षा संबंधी जटिल परिदृश्य तक को शामिल किया जा सकता है। **इसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:**

- **व्यापक नीति का अभाव:** विशेषज्ञों का दावा है कि एक **सुपरिभाषित नेबरहुड पॉलिसी** नहीं होने की वजह से, भारत ने अपने पड़ोसियों के साथ अपने **"संबंधों को दिशा देने"** की बजाय **"संबंधों के प्रबंधन" पर अधिक ध्यान** दिया है।
- इस क्षेत्र के कुछ देशों के मध्य **तनावपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों** ने क्षेत्रीय स्तर पर नीतियों के कार्यान्वयन में गंभीर चुनौतियां पैदा की हैं।
  - उदाहरण के लिए, पिछले **सार्क शिखर सम्मेलन में सीमा-पार ऊर्जा सहयोग, मोटर वाहनों के आवागमन और रेलवे कनेक्टिविटी के क्षेत्र में सहयोग से संबंधित तीन समझौतों का प्रस्ताव** किया गया था। इनमें से केवल **ऊर्जा-सहयोग पर ही हस्ताक्षर** किए गए थे। पाकिस्तान ने अन्य दो समझौतों पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया था।
- **सुरक्षा जोखिम:**
  - **सीमा पार आतंकवाद:** कहीं-कहीं अपर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था वाली सीमाएं, पाकिस्तान जैसे देशों द्वारा आतंकवादियों को शरण देना, बढ़ता कट्टरपंथ और उग्रवाद आदि भारत में आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं।
  - **नशीली दवाओं की तस्करी: गोल्डन ट्रायंगल तथा गोल्डन क्रिसेंट** जैसे तस्करी वाले क्षेत्रों के निकट स्थित होने के कारण भारत में नशीली दवाओं की तस्करी की समस्या और बढ़ गई है।
  - **सोमालिया के तट पर पायरेसी या समुद्री डकैती** की घटनाएं तथा आतंकवादियों द्वारा जलमार्गों का उपयोग करना, जैसे- मुंबई आतंकवादी हमला।
- **दक्षिण एशिया में चीन की पैठ:** वन बेल्ट वन रोड (OBOR) पहल को बढ़ावा देने के कारण **सार्क देशों के साथ चीन के व्यापार की मात्रा में पिछले दशक में काफी अधिक और तेज गति से वृद्धि** हुई है।
  - समय-समय पर **श्रीलंका, मालदीव और नेपाल** सहित भारत के विविध पड़ोसियों ने भारत के खिलाफ **चीनी पक्ष** का इस्तेमाल किया है।
    - » उदाहरण के लिए, नेपाल द्वारा सीमा पर नाकाबंदी के दौरान आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के स्रोत के रूप में चीन ने स्वयं को भारत के संभावित विकल्प के रूप में पेश किया था।
- **पड़ोसियों के साथ विश्वास निर्माण में कमी:** भारत के पड़ोसियों को लंबे समय से महसूस होता रहा है कि भारत उनके साथ **समानता का व्यवहार नहीं** करता है। **बांग्लादेश, श्रीलंका** और **मालदीव** में भारत की सैन्य कार्यवाहियों को आज भी भारत की **क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा के प्रमाण** के रूप में देखा जाता है।
- **पड़ोसी देश में आर्थिक संकट:** उदाहरण के लिए, **श्रीलंका** में आर्थिक अस्थिरता और विदेशी मुद्रा की भारी कमी ने इस द्वीपीय राष्ट्र में भारत के निर्यात को बहुत हद तक प्रभावित किया था।
- **कनेक्टिविटी और सीमा अवसंरचना:** खराब अवसंरचना मुक्त व्यापार और निवेश समझौतों के लाभ को सीमित कर देती है। कई सीमावर्ती जिले अपेक्षाकृत कम विकसित हैं।
  - साठ के दशक की शुरुआत में **भारत और पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) के बीच रेल संपर्क आज की तुलना में बेहतर था।**
  - **भारत-नेपाल सीमा** कागजी स्तर पर ही **खुली सीमा** है। अवसंरचना के अभाव के कारण **इस मार्ग पर आवागमन बेहद कठिन** है।
- **घरेलू राजनीति का प्रभाव:** घरेलू-राजनीतिक मजबूरियां और **नृजातीय विचारधाराएं** कई बार भारत की नेबरहुड पॉलिसी को प्रभावित करती हैं। इससे द्विपक्षीय संबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए;
  - **पश्चिम बंगाल** के विरोध करने के कारण **बांग्लादेश के साथ तीस्ता जल समझौते** में देरी हो रही है।
  - **श्रीलंका में सिंहली-बौद्ध बहुसंख्यकवाद के खिलाफ श्रीलंकाई तमिलों के संघर्ष को भारत का समर्थन** नृजातीय (भारत में तमिल से संबंध) विचारधारा के कारण था।
  - नेपाल के तराई क्षेत्र में **मधेशियों के हितों का समर्थन** किया गया है, क्योंकि उनका **भारत में घनिष्ठ पारिवारिक संबंध है।**
- **विकास परियोजनाओं के कार्यान्वयन में देरी:** पड़ोसी देशों में भारत की **लाइन ऑफ क्रेडिट (LOC) आधारित परियोजनाओं** का मूल्य **2014 के 3.3 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2020 में 14.7 बिलियन डॉलर** हो गया था। भारत की **वैश्विक सॉफ्ट लेंडिंग (कम शर्तों वाला ऋण) का 50 प्रतिशत हिस्सा** उसके पड़ोसियों को प्राप्त होता है।
  - हालांकि, ऐसी **परियोजनाओं के कार्यान्वयन में काफी देरी** होती है। इससे पड़ोसियों में **निराशा और अविश्वास** पैदा हो सकता है और क्षेत्र में **भारत का प्रभाव कम** हो सकता है।
- **जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएं:** यह क्षेत्र प्राकृतिक आपदाओं और जलवायु परिवर्तन से संबंधित चुनौतियों का सामना कर रहा है। ये पर्यावरणीय समस्याएं विकास संबंधी पहलों को बाधित कर सकती हैं। साथ ही, **जलवायु प्रवासन** और इससे जुड़ी समस्याओं को भी जन्म दे सकती हैं।

बॉक्स 3.1. नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (NFP) के लिए एक चुनौती के साथ एक अवसर के रूप में कोविड-19

- कोविड-19 महामारी ने पूरे दक्षिण एशियाई क्षेत्र में बड़ी चुनौतियां खड़ी कर दी थी। इसे **बढ़ती मुद्रास्फीति, कम होती खाद्य सुरक्षा और बढ़ती राजनीतिक अस्थिरता** के रूप में देखा जा सकता था। इस संकट के दौरान भारत ने स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, प्रशिक्षण जैसी सार्वजनिक सेवाओं के लिए एक प्रमुख सेवा प्रदाता की भूमिका निभाई थी। इस दौरान भारत ने पड़ोसी देशों को वैज्ञानिक और तकनीकी सहायताएं भी प्रदान की थी।

- **कोविड-19 के दौरान अवसर**
  - **वैक्सीन कूटनीतिः** भारत ने **वैक्सीन मैत्री पहल** के तहत अपने निकटतम पड़ोसी देशों को कोविड-19 के टीके उपलब्ध कराने को प्राथमिकता दी। इस प्रयास ने चीन के प्रभाव का सामना करने के लिए एक शक्तिशाली सॉफ्ट पावर टूल के रूप में काम किया।
  - **नेतृत्व की भूमिकाः** NFP के भाग के रूप में, भारत ने इस महामारी से निपटने के लिए एक क्षेत्रीय कार्य योजना तैयार करने हेतु **सार्क फोरम** को फिर से सक्रिय किया था। इसके अलावा, भारत ने अपने पड़ोसी देशों तक पहुंच बनाने के लिए द्विपक्षीय कूटनीति को अपनाया।
  - **विश्वास बहाली और सहयोगः** भारत ने कुछ देशों में सैन्य राहत पहुंचाई, टेस्टिंग के लिए प्रयोगशालाएं स्थापित की तथा महत्वपूर्ण दवाओं व अस्पताल से संबंधित उत्पादों की आपूर्ति की। इससे मालदीव जैसे देशों के साथ द्विपक्षीय संबंध मजबूत हुए।
  - **मित्रता की भावनाः** भारत ने विस्तारित पड़ोसियों सहित अपने निकटतम पड़ोसियों की मदद करने हेतु कई पहलें शुरू की, जिससे भारत की वैश्विक छवि बढ़ी और मित्रता की भावना उत्पन्न हुई।

बॉक्स 3.2. एक छोटी सी वार्ता! पड़ोसी देशों में विकास से संबंधित भारत की पहलें

4. भारत अपनी नेबरहुड पॉलिसी को और अधिक मजबूत व प्रभावशाली कैसे बना सकता है?

भारत की नेबरहुड फर्स्ट नीति (NFP) को स्थायित्व प्रदान करने एवं उसके प्रभाव को मजबूत करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। यह इस क्षेत्र के भीतर विविध चुनौतियों का समाधान करने और अवसरों का लाभ उठाने के लिए अति आवश्यक है। इसके लिए भारत निम्नलिखित रणनीतिक उपायों पर विचार कर सकता है:

- **क्षेत्रीय मंचों और संगठनों को पुनर्जीवित करना:** पड़ोसी देशों के साथ निरंतर राजनयिक संपर्क को बढ़ावा देने के लिए भारत को **सार्क, बिम्सटेक, इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन** (IORA) जैसे क्षेत्रीय मंचों (फोरम्स) का सक्रिय रूप से उपयोग करना चाहिए।
  - ये मंच निरंतर सहभागिता, विवाद समाधान एवं क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य कर सकते हैं।
- **चीन के साथ संवाद:** चीन के साथ चल रही वार्ताओं में **वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) की स्पष्टता को सुनिश्चित करने** को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसके साथ ही, दोनों देशों के बीच **सीमा सुरक्षा सहयोग समझौते** में शामिल स्वीकार्य मानदंडों का उल्लंघन करने वाली किसी भी घुसपैठ का भारत को दृढ़ता से विरोध करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
- **पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद से निपटना:** 'नेबरहुड फर्स्ट नीति' फ्रेमवर्क के भीतर आतंकवाद से निपटने के लिए एक एकीकृत प्लेटफॉर्म बनाना चाहिए। इस दिशा में क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सक्रिय सहयोग करने पर ध्यान देना चाहिए।
  - इसके अतिरिक्त भारत, पाकिस्तान के साथ आर्थिक संबंध बेहतर करने की संभावनाओं को तलाश सकता है, बशर्ते पाकिस्तान दोनों देशों के लोगों के बीच व्यापक स्तर पर संपर्क को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्धता प्रदर्शित करे।
- **आंतरिक सुरक्षा संरचना को मजबूत बनाना:** पड़ोसी देशों के साथ सक्रिय सहभागिता को बढ़ाने के लिए, भारत को सबसे पहले आतंकवाद से उत्पन्न चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने हेतु अपनी आंतरिक सुरक्षा संरचना को मजबूत करना होगा।
- **वैश्विक शक्तियों के साथ सहयोग:** भारत का दृष्टिकोण हमेशा से विश्व की प्रमुख शक्तियों को अपने पड़ोस से दूर रखने पर केंद्रित रहा है। हालांकि, चीन और पाकिस्तान से उत्पन्न चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिए भारत को अपनी विदेश नीति को प्रासंगिक बनाए रखना आवश्यक है।
  - इसके तहत **संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और यूरोपीय संघ** के साथ बेहतर **रणनीतिक साझेदारी** बनाना शामिल है। साथ ही संयुक्त राष्ट्र, ब्रिक्स एवं G-20 जैसे **बहुपक्षीय संगठनों तथा फोरम्स में सक्रिय भागीदारी** करना भी शामिल है।
- **छोटे पड़ोसी देशों के साथ बेहतर सहभागिता:** भारत की कूटनीतिक पहलें उसके छोटे पड़ोसी देशों की अपेक्षाओं के अनुकूल और आशंकाओं के विपरीत होनी चाहिए।
  - इसके तहत प्रत्येक देश और व्यापक क्षेत्र के लिए विशिष्ट रणनीतियाँ तैयार की जा सकती हैं। इसके लिए घरेलू स्तर पर अलग-अलग एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय तथा विदेश मंत्रालय एवं रक्षा मंत्रालय के बीच घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- **कनेक्टिविटी से संबंधित कमियों को दूर करना:** सड़क मार्गों, रेलवे, अंतर्देशीय जलमार्गों, बंदरगाहों, ऊर्जा नेटवर्क और डिजिटल सीमा शुल्क सहित अवसंरचना के विकास में पर्याप्त निवेश करने की आवश्यकता है।
  - इसके अतिरिक्त, पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक खुलेपन और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को सुरक्षा के समक्ष खतरा मानने की बजाए लाभप्रद मानने की जरुरत है।
  - गौरतलब है कि संसदीय समिति ने इस उद्देश्य के लिए **बिम्सटेक के तहत एक क्षेत्रीय विकास निधि** स्थापित करने का सुझाव दिया है।
- **पर्यटन को बढ़ावा देना:** NFP के अंतर्गत, चिकित्सा-पर्यटन के अलावा पर्यटन के अन्य उप-क्षेत्रकों में निवेश को प्रोत्साहन देना चाहिए। इससे पड़ोसी देशों के लोगों के साथ संपर्क को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही, इससे भारत की सॉफ्ट पॉवर **संबंधी छवि** को मजबूत बनाने में मदद मिलेगी और **क्षेत्र के आर्थिक एकीकरण** को भी बढ़ावा मिलेगा।
  - गौरतलब है कि बड़ी संख्या में **बांग्लादेशी नागरिक भारत में चिकित्सा उपचार** करवाने आते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत में **धार्मिक पर्यटन के लिए नेपाल से बड़ी संख्या में पर्यटक** आते हैं। ये पड़ोसी देशों के साथ पर्यटन संबंधों को बढ़ाने की क्षमता के उदाहरण हैं।
- **जल बंटवारा एवं पर्यावरण सहयोग:** जल के बंटवारे, संधारणीय संसाधन प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण पर प्रयासों में सहयोग से साझा चुनौतियों का समाधान करने तथा पड़ोसी देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है। इसे **डेटा के आदान-प्रदान और वैज्ञानिक अनुसंधान** के माध्यम से साकार किया जा सकता है।

बॉक्स 4.1. यूरोपीय संघ (EU): क्षेत्रीय एकीकरण के लिए एक मॉडल के रूप में

- **1945 से पहले**, यूरोपीय इतिहास लंबे समय तक चलने वाले संघर्षों और शांति की बहुत कम अवधियों से युक्त है।
- **द्वितीय विश्व युद्ध के बाद** यह महसूस किया गया कि घनिष्ठ सहयोग से युद्ध की भयावहता को टाला जा सकता है। इससे यूरोपीय संघ (EU) की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।
  - **यूरोपीय संघ में शामिल होने के लिए सदस्य देशों को कुछ राजनीतिक और आर्थिक अधिकार त्यागने पड़ते हैं।** इसके बदले में, उन्हें **'एकल यूरोपीय बाजार'** के लाभ (जैसे कि मुक्त-व्यापार क्षेत्र से जुड़े लाभ) प्राप्त होते हैं। साथ ही, इससे ये देश लोगों, वस्तुओं, सेवाओं और पूंजी की मुक्त आवाजाही से भी लाभान्वित होते हैं।
  - इस व्यवस्था के चलते यूरोपीय संघ के देशों में **स्थिरता को बढ़ावा मिला है, सदस्यों के बीच टकराव में कमी आई है और आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि हुई है।**
  - यह व्यवस्था EU को एक अद्वितीय शासी निकाय और **दुनिया का पहला सुपर-नेशनल संगठन** बनाता है।

यूरोपीय संघ की सफलता से सबक:

- **ऐतिहासिक सुलह:** यूरोपीय संघ की सफलता का श्रेय **फ्रांस और जर्मनी** के बीच ऐतिहासिक सुलह को दिया जाता है। अन्य क्षेत्रीय संगठनों की सफलता के लिए भी इसी तरह के सामंजस्य की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए;
  - **सार्क की सफलता** के लिए **पाकिस्तान और भारत के बीच** सुलह होना आवश्यक है।
  - इसी प्रकार, **पूर्वी एशिया** (East Asia) की एक गुट के रूप में सफलता के लिए **जापान और चीन** के बीच तथा **जापान व कोरिया** के बीच सार्थक सुलह आवश्यक है।
- **राजनीतिक और सार्वजनिक इच्छा:** यदि एकीकरण को सफल करना है, तो इसके लिए सरकार के साथ-साथ जनता को भी विश्वास होना चाहिए कि यह उनके व्यापक राष्ट्रीय हित में है।

निष्कर्ष

भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (NFP) गतिशील नीति है। यह क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार सामंजस्य स्थापित करते हुए क्षेत्र में भारत के प्रासंगिक हितों को समायोजित करती रहती है। भारत की अपने पड़ोसी देशों के प्रति प्रतिबद्धता दक्षिण एशिया और अन्य क्षेत्रों के भविष्य को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी। भारत अपने पड़ोसी देशों का कठिन समय में सहयोग करने और उनके साथ मिलकर काम करने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहा है। ऐसे में स्थिर एवं समृद्ध पड़ोस सुनिश्चित करने के लिए व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो भारत के राष्ट्रीय हितों एवं विदेश नीति के उद्देश्यों के अनुरूप हो।

टॉपिक - एक नज़र में

भारत की नेबरहुड पॉलिसी: संभावनाएं और चुनौतियां

भारत के पड़ोसी देश और नेबरहुड पॉलिसी

- **निकटतम पड़ोसी देश:** भारत की अपने निकटतम पड़ोसी देशों के साथ सीमाएं लगती हैं और सभ्यता आधारित संबंध हैं। इन देशों में अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, मालदीव, म्यांमार, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका शामिल हैं।
- **विस्तारित पड़ोस:** ये देश भारत से दूर स्थित हैं, किंतु भारत के साथ उनके महत्वपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक संबंध हैं।
- **नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी:** यह पॉलिसी 1947 से ही **भारतीय विदेश नीति का अभिन्न अंग** रही है। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय संबंधों तथा सहयोग को बढ़ावा देना है।

भारत की नेबरहुड पॉलिसी का विकास

- **औपनिवेशिक चरण: उपनिवेशवाद-विरोध, साम्राज्यवाद-विरोध और नस्लवाद-विरोध** (1948 का एशियाई संबंध सम्मेलन) की समान विचारधाराओं ने पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों को मजबूत किया था।
- **1950 और 1960 का दशक:** भारत ने "क्षेत्रीय संरचना" के बजाय **द्विपक्षीय वार्ताओं और संधियों के जरिये** अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने का विकल्प चुना था।
- **1960-1990 का दशक:** क्षेत्रीय प्रभुत्व और उप-महाद्वीपीय वर्चस्व (Hegemony) की स्थापना का चरण।
- **1990- 2000 के दशक: गुजराल डॉक्ट्रिन** के तहत भारत ने पड़ोसी देशों को **एकतरफा रियायत** देने का आश्वासन दिया।
- **2008 के बाद:** पड़ोसी देशों में **चीन का प्रभाव बढ़ने** लगा था। इसलिए, भारत ने 'नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी' (NFP) की परिकल्पना की।
- **2014 के बाद:** आर्थिक सहयोग, विकास आदि के माध्यम से संबंधों को मजबूत करने के लिए NFP को नया रूप दिया गया।

भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी को आगे बढ़ाने में चुनौतियां

- **व्यापक नीति का अभाव:** इसलिए, भारत ने अपने पड़ोसियों के साथ अपने "**संबंधों को दिशा देने**" की बजाय "**संबंधों के प्रबंधन**" **पर अधिक ध्यान** दिया है।
- **तनावपूर्ण द्विपक्षीय संबंध:** इस वजह से सार्क जैसे क्षेत्रीय मंच अपनी पूरी क्षमता के अनुसार कार्य नहीं कर पा रहे हैं।
- **सुरक्षा जोखिम:** सीमा पार आतंकवाद, नशीली दवाओं की तस्करी, आदि।
- **दक्षिण एशिया में चीन की पैठ:** भारत के कई पड़ोसी देशों ने भारत के खिलाफ **चीनी पक्ष** का इस्तेमाल किया है।
- **अन्य मुद्दे:** पड़ोसियों के साथ विश्वास निर्माण में कमी, पड़ोसी देशों में आर्थिक संकट, विकास परियोजनाओं का विलंबित कार्यान्वयन, जलवायु परिवर्तन आदि।

भारत की नेबरहुड पॉलिसी की प्रासंगिकता

- **भू-सामरिक हित:** क्षेत्रीय नेतृत्व; चीन को प्रतिसंतुलित करना; UNSC, WTO, IMF जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग आदि।
- **सुरक्षा:** ऐसे पड़ोसी देश जो सीमा पार अलगाववादी समूहों को शरण नहीं देते, वे क्षेत्रीय अखंडता और समुद्री सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **आर्थिक हित:** पूर्वोत्तर क्षेत्र में विकास को बढ़ावा देना, देश की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना (जैसे- हिमालयी पड़ोसी देश जल विद्युत के लिए महत्वपूर्ण हैं)।
- **सॉफ्ट पावर कूटनीति:** उदाहरण के लिए- भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म का प्रसार लोगों के बीच परस्पर संबंधों और राजनयिक संबंधों को मजबूत करने के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करता है।

आगे की राह

- **क्षेत्रीय मंचों को पुनर्जीवित करना:** सार्क, बिम्सटेक, IORA आदि निरंतर जुड़ाव, विवाद समाधान के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य कर सकते हैं।
- **चीन के साथ संवाद: LAC की स्पष्टता को सुनिश्चित करने** को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। **सीमा सुरक्षा सहयोग समझौते** में शामिल स्वीकार्य मानदंडों का उल्लंघन करने वाली किसी भी घुसपैठ का भारत को दृढ़ता से विरोध करना चाहिए।
- **पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद से निपटना:** इस प्रकार के आतंकवाद से निपटने के लिए क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग करना चाहिए। साथ ही, पाकिस्तान के साथ व्यापार भी करना चाहिए।
- **आंतरिक सुरक्षा संरचना को मजबूत बनाना:** इससे पड़ोसी देशों के साथ सक्रिय सहभागिता को बढ़ाने में मदद मिलेगी।
- **वैश्विक शक्तियों के साथ सहयोग:** इससे चीन और पाकिस्तान द्वारा उत्पन्न चुनौतियों से निपटने में मदद मिलेगी।
- **अन्य मुद्दे:** लघु पड़ोसी देशों के साथ बेहतर सहभागिता, कनेक्टिविटी से संबंधित कमियों को दूर करना, जल बंटवारा और पर्यावरण सहयोग आदि।

बॉक्स और चित्र

बॉक्स 1.1. विस्तारित पड़ोसी देशः भारत के वैश्विक नेतृत्व के प्रवेश द्वार 3

बॉक्स 1.2. कौटिल्य का "मंडल सिद्धांत": प्राचीन भारत में पड़ोसी राज्यों के प्रति नीति का पुनर्विलोकन 4

बॉक्स 3.1. नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (NFP) के लिए एक चुनौती के साथ एक अवसर के रूप में कोविड-19 6

बॉक्स 3.2. एक छोटी सी वार्ता! पड़ोसी देशों में विकास से संबंधित भारत की पहलें 6

बॉक्स 4.1. यूरोपीय संघ (EU): क्षेत्रीय एकीकरण के लिए एक मॉडल के रूप में 7

चित्र 1.1. भारत के पड़ोसी देश 2

चित्र 1.2. गुजराल डॉक्ट्रिन के सिद्धांत 3

39 in Top 50 Selection in CSE 2022

1 AIR ISHITA KISHORE

2 AIR GARIMA LOHIA

3 AIR UMA HARATHI N

हिंदी माध्यम में 40+ चयन CSE 2022 में

– हिंदी माध्यम टॉपर –

66 AIR KRITIKA MISHRA

85 AIR BHARAT JAI PRAKASH MEENA

105 AIR DIVYA

120 AIR GAGAN SINGH MEENA

173 AIR ANKIT KUMAR JAIN

8 in Top 10 Selection in CSE 2021

2 AIR ANKITA AGARWAL

3 AIR GAMINI SINGLA

4 AIR AISHWARYA VERMA

5 AIR UTKARSH DWIVEDI

6 AIR YAKSH CHAUDHARY

7 AIR SAMYAK S JAIN

8 AIR ISHITA RATHI

9 AIR PREETAM KUMAR

दिल्ली

HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B, 1st Floor, Near Gate-6, Karol Bagh Metro Station, Delhi

MUKHERJEE NAGAR CENTRE
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar, Delhi

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066

1 AIR SHUBHAM KUMAR
CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

ENQUIRY@VISIONIAS.IN /VISION_IAS WWW.VISIONIAS.IN /C/VISIONIASDELHI VISION_IAS /VISIONIAS_UPSC

अहमदाबाद भोपाल चंडीगढ़ गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे राँची सीकर